

पूजाक फूल

आरसी प्रसाद सिंह

पूजाक फूल

आरसी प्रसाद सिंह

तारामण्डल

मुजफ्फरपुर

पूजाक फूल

प्रथम संस्करण : नवम्बर १९६७

प्रकाशक

तारामण्डल

मुजफ्फरपुर

मूल्य १. ७५

मुद्रक

चंदा प्रेस

मुजफ्फरपुर

मन्द : कवियश : प्रार्थी

"पूजा क फूल" हमर मैथिली-रचना-परम्परा मे दोसर कृति थिक, जकरा सादर प्रस्तुत करबाक सौभाग्य आइ प्राप्त भऽ रहल अछि मातृभाषा - हितैषी एवं साहित्य - प्रेमी अपने महानुभाव लोकनिक सेवामे। "माटिक दीप" हमर प्रथम काव्य - संकलन छल, जे विद्वान् - बन्धुक सहज स्नेह पाबि पर्याप्त पुरस्कृत भेल। एहि सँ प्रोत्साहित भऽ हम पुनः "पूजाक फूल" अपन हृदय-चंगेरी मे भरि कऽ मिथिला-वाणीक सुवर्ण-मन्दिर-द्वार पर उपस्थित छी। मर्मज्ञ पाठक एवं सहृदय समालोचक कें यदि एहि फूल मे कोनो अपूर्वता भेट जाएन्ह, तँऽ हमर श्रम-साधन कृतार्थ भेल। कारण,जे नाना प्रकारक फूल जंऽएक फूलदान मे सजायल जाय,तंऽ सौरभक विभिन्नतो मे एकता क अनुभव भऽ सकैत अछि। ओना तंऽ, पूजा मे भावने प्रधान मानल जायत छैक। किन्तु, पुजारीक कर्त्तव्य जाहि ठाम समर्पित होयत छैक, ताहि ठाम सेवाक अधिकार प्राप्ते रहैत छैक। से हम 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' क उपासक साहित्य-कलाकार 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' 'असदो मा सद्गमय' तथा 'मृत्योर्मामृतं गमय' क सतत् प्रार्थना करैत साधना - निरत रही, भगवती भारतीक करुणा - कटाक्ष सँ एहि मंगल आशीषक आकाँक्षी छी।

तारामण्डल, मुजफ्फरपुर
दिनांक १४ नवम्बर १९६७
विद्यापति - जयन्ती

आरसी प्रसाद सिंह

कविक अन्य काव्य-कृति

मैथिली

१.	माटिक दीप	१९५८

हिन्दी

२.	हीरा मोती	१९६६
३.	बाल गोपाल	१९६६
४.	कागज की नाव	१९६६
५.	कथा माला	१९६६
६.	आरण्यक	१९६५
७.	सोनेका झरना	१९६५
८,	संजीविनी	१९६४
९.	ठंढो छाया	१९५६
१०.	जादू की वंशी	१९५४
११.	रामकथा	१९५४
१२.	प्रेम - गीत	१९५४
१३.	नन्ददास	१९५३
१४.	कलापी	१९३८

पूजाक फूल

—::००::—

पूजाक फूल

श्रीकृष्णार्पणमस्तु

पूजाक फूल

फूल छी पूजाक आनल
लोढि कऽ तरु-कल्प-वन सँ !
देव-प्रतिमा पर चढावय-
हेतु हम सुप्रीत मन सँ ।
हे पुजारी, आइ मिथिला-
भारतीकेर द्वार खोलू ।
बैसि ली किछु काल हमहू
अर्चना मे, कनेक डोलू ।

पूजाक फूल

भाल पावन तँ करऽ
हमरो दिअऽ चन्दन-चरण सँ।
फूल छी पूजाक आनल
लोढि कऽ तरु-कल्प-वन सँ।

कोन ऋतुसंहार मे जानी
न, हम जागल प्रवासी ?
इन्द्रधनुषी स्वप्न-माया सँ
अचेतन चिर - उदासी।
कुंज मे प्रत्येक पुंजीभूत
देखल भृंग -- गुंजन।
कोकिला - कल - कण्ठ -
कूजन सँ शिथिल वनराजि उन्मन।

मलय-मारुत मिलि अबै छल
झूमि कऽ विकसित सुमन सँ।
फूल छी पूजाक आनल
लोढि कऽ तरु-कल्प-वन सँ।

लोक - संकुल देखि पथ
संकोच मे जीवन पड़ल छल।
स्रोत सूखल छल रसक,
जड़ता क सिकता सँ भरल छल।

पूजाक फूल

एक दिन मंगल - प्रहर मे
कऽ उठल झंकार वीणा
कोन जे, भऽ गेल अन्तर-
तर सजल साओन महीना ।

जीवन क संकेत मुसकी
देल बीजांकुर - नयन सँ ।
फूल छी पूजाक आनल
लोढि कऽ तरु-कल्प-वन सँ ।

चिर-विकल संसार-वात्या-
चक्र मे घूर्णित अनाड़ी ।
आइ आयल छी बनल हम
भगवती - करुणा - भिखारी
फूल ई पूजाक अर्पित
भारती-भारत चरण पर ।
राखि जे विज्ञान - दीपक
देथि मन-तिमिरावरण पर ।

जनिक करुणा-दृष्टिएँ हो
मुक्त चिर-जीवन मरण सँ ।
फूल छी पूजाक आनल
लोढि कऽ तरु-कल्प-वन सँ ।

एक फूल क हेतु शत-शत
शूल-बेधल प्राण कानल।
एक जीवन - अंश - खातिर
मृत्यु-विषधर-दंश जानल।
ई अजन्मा प्यास डाबर-
पानि सं की जा सकै अछि ?
ई पपीहा - प्राण, जे
अनिमेष स्वाती कें तकै अछि।

भऽ सकै अछि तृप्त की
कल्पान्त-मूसलधार घन सँ ?
फूल छी पूजाक आनल
लोढि कऽ तरु-कल्प-वन सँ।

फूल ई ने बनि सकै अछि
रूपसी - अनुरूप माला !
की सुशोभित कऽ सकै अछि
केश कोनो देव - बाला ?
की बनत कोनो विलासी
राज भवनक शयन-सौरभ ?
की झड़त वन - कुसुम ई
एकान्त मे सुरलोक-दुर्लभ ?

पूजाक फूल
की बनत निर्माल्य ई
सौभाग्य-सुरभित जागरण सँ?
फूल छी पूजाक आनल
लोढि कऽ तरु-कल्प-वन सँ।

प्रकृति - परिवर्तन असंभव
मानवक थिक ने कदाचित।
नित्य विकसन-शील देखल
जायतछि जीवन अयाचित।
सुमन जे सूरजमुखी
आदित्य-मण्डल कें निहारय,
से अमर ज्योति-पिपासा
की हमर सर्वस्व हारय ?

चेतना - सागर तरंगित
भऽ रहल प्रत्येक कण सँ।
फूल छी पूजाक आनल
लोढ़ि कऽ तरु-कल्प-वन सँ।

मुजफ्फरपुर,
१४ अक्टूबर १८६७

मंगलाचरण

भोला भंडारी बाबा, भोला भंडारी हो ।

अपने तँ पीबथि भोला
भाँग आ धतूरा हो ।
अनका खोओवथि दही
चीनी आ चूड़ा हो ।

भोला भंडारी बाबा, भोला भंडारी हो ।

अपने दिगम्बर भोला
सेवथि मसान हो ।
सब के पटम्बर बाँटथि,
पक्का मकान हो ।

भोला भंडारी बाबा, भोला भंडारी हो ।

गौरी क लेल भोला
बतहा बौराह हो ।
दुनिया क लेल दानी
तिरलोकी - नाह हो ।

भोला भंडारी बाबा, भोला भंडारी हो ।

लखनऊ १९६३

विद्यापति-वन्दना

आइ कतऽ छथि राजा शिवसिंह ?
रानी लखिमा दाइ कतऽ ?
कालस्रोत में राजसभा चलि
गेल भासि कऽ आइ कतऽ ?

कतेक वसन्तक अन्त भेल, ऋतु
कतेक बीति गेल पावस शीत ?
किन्तु, मुखर मिथिलाक देशमे
विद्यापतिक आइ धरि गीत।

राजमहल सँ पर्णकुटी धरि,
कोबर सँ शिव-आयल धरि,
गाबि रहल अछि, हाट-बाटमे
क्यो हर-हर कहि, क्यो हरि-हरि।

पोखरि आइ रजोखरि अछिए,
करैत नृपक वन्दन- गुण-गान।
डाबर-डीह भेल राजधानी,
देखि रहल अछि युग -अवसान।

पूजाक फूल

कतऽ जन्म लेल, कतऽ कैल
कविताक बाल-रवि किरण-प्रकाश।
कोन एहन सोनाक माटि सँ
जागल कवि प्रतिभा -मधुमास ?

देशक सीमा लाँघि जनिक यश
आर्यावर्त भेल विस्तार।
जनिक काव्य - कोकिला कैल
कल कूजन सात समुद्रक पार।

कविशेखर सँ शशिशेखर भऽ,
जे बनि गेला भक्त सँ नाथ।
बाजितपुर मे आइ झुकावति
अछि जनता जनिकाँ पथ माथ।

से नरपुंगव, महामनीषी,
वन्दनीय, प्रातःस्मरणीय,
कवि विद्यापति करथु मैथिली कें
मंगल, सर्वादरणीय॥

लखनऊ,
सितम्बर १९६१

प्रश्न आ उत्तर

''के अपने औ, थिकौं बटुक ?

की कहू तँ, अपनेक नाम ?

कतऽ गमन कैल? कोन प्रयोजन ?

बसय कोन छी ग्राम ?

''तीरभुक्ति सँ हम अबैत छी,

नाम हमर गिरधारी ।

संग लेल नहि कैंचा-कौड़ी

ने लोटा, ने थारी ।

ब्रह्मचर्य-ब्रत-पालन-तत्पर,

हम छी मिथिलावासी ।

विद्योपार्जन-हेतु जाइत छी,

तीर्थराज सँ काशी ।''

लखनऊ,
१० जून १६६१

फागुन

फागुन मास मनोहर आयल,
बीतल शिशिर - हेमन्त ।
वन-वन मे मधु गन्ध लुटावैत
खिल गेल रूप - वसन्त ।।

गोटक चुनरी पीत,
पीताम्बर खेत-खेत फहरंत ।
नवल पलास, लाल भेल उपवन,
मनु कण अनल ज्वलंत ।।

नवदल-मुकुट साजि कऽ तरुवर
दुलहा बनल हसंत ।
लता-पता सभ पहिरि हरित पट
सुख मे भरल अनन्त ।।

कुहू-कुहू रव कोइली बोलय,
डोलय मलय दिगन्त ।
जीव-जन्तु सभ दिशा-दिशा मे
मस्त - मगन किलकन्त ।।

डारि-डारि पर भाँति-भाँति केर
पंछी चहकि उड़न्त ।
ढूहि लड़य जकरा—तकरा सँ,
गनय न बूढ़ — अदन्त ।।

फागुन

हरियर भेल सकल जग बिहुँसय,
की रंक ? की श्रीमंत ।
आबि गेल फगुआ अगिलगुआ,
अगुआ भेल उगन्त ॥

ठमकय लागल ढोलक तबला,
झालि मृदंग बजंत ।
लागल मचय धमारु,
गमारहु के मन सुख हरसंत ॥

गावय लागल लोग कबीर,
अबीर सरस बरिसंत ।
लऽ पिचकारी होरी खेलय
चलल तरुण रसवंत ॥

संत-समागम-जकाँ वसन्तक
आगम भेल तुरंत ।
शीत भीत भेल, जगत जीत लेल,
फूटल किरण सुकन्त ॥

लखनऊ,
१० जनवरी १९६२

वसन्त-आह्वान

फागुन आगि लगावैत आयल,
वन-वन कुसुमक दाह ।
कुसुमाकरक पताका फहरय
लागल लापरवाह ।

लाल कटोरी, पीयर पानी,
खिलल गुलाबक फूल ।
अगिलगुआ फगुआ में अगुआ
बनि आयल हर मूल ।।

अरमानक बिरवा हरिआयल,
वाणी पिक पपिहाक
जानि पड़े ने, कऽ जाइत अछि
मुख सँ कोन अवाक ?

मोन पड़य अछि, एखनो कोनो
दूरागत कलगान
कोनो गोपक बंशी मे
दोहराइत छल अनजान ।

वसन्त आह्वान

मोन पड़य अछि एखनो कोनो
पनिघट पर झंकार
करैत पानि सों भरैत गागरी
पनिहारिन मनुहार ॥

मोन पड़य अछि, एखनो ककरो
पीत आँचरक लहरा
मोर बना कय नचा दैत छल,
जखन उठैत छल फहरा ॥

मोन पड़य अछि एखनो आमक
गाछी मे भमरा
गुन-गुन करैत घुमैत कुञ्जवन
ताकि अबय छल हमरा ।

एखनो अमिय चुवैत अछि अमिया-
वन में मलय - हिलोर ।
एखनो धरि अछि उठैत राजपथ पर
फागुक सुर जोर ॥

एखनो धरि आमक महुआ संग
लेल जाइत अछि नाम ।
मोन पड़य अछि एखनो धरि
मधुऋतु मे अप्पन गाम ।

किन्तु, गाम मे देखि रहल छी,
ने ओ रसक प्रवाह ।
अलबेला रग-रग मे रागक
जकर भरल उत्साह ।

आगि लगल फगुआक अंक मे,
दावानल सुनगैछ ।
जिनगी-जिनगी मे चिनगी अछि
लागल, ढोल बजैछ ।

पछवाक अलबतहा बसात मे
झड़-झड़ पात झड़ैछ ।
बात-बात मे एखनो धरि
दृग मे बरिसात भरैछ ।

अथवा हमर मने मे की अछि
पँसल पीड़ाक बान ?
फेर किअैक एखनो धरि कोकिल
अछि करैत आह्वान ?

एरौत,
२८ फरवरी १९६०

प्रतीक्षा

दीप जरैत रहि गेल राति भरि,
सगुन उचारैत राति भरि।
हम रहि गेलहु आँखि सँ अपनेक
बाट बोहारैत राति भरि ॥

एक चान बिनु सून लगय छैक
जेना तरेगन भरल अकाश।
अनगिन रूप जगत मे रहितहु
मोन रहैत अछि हमर उदास।

सपनक माँझी गेल नाव पर
पार उतारैत राति भरि।
दीप जरैत रहि गेल राति भरि,
सगुन उचारैत राति भरि।

आइ इजोरिया घटा देखि कऽ
नाचि रहल अछि मानस-मोर।
लाख-लाख जुग चान निहारल,
तइयो पियासल नयन-चकोर।

मानक माली रहल मनोरथ-
बाग उजाड़ैत राति भरि।
दीप जरैत रहि गेल राति भरि,
सगुन उचारैत राति भरि।

१६६२

मधुयामिनी

हमर प्राण तों कतऽ विकल छऽ ?
आबह तँ, देखह ई कौतुक ।
पीबि रहल अछि मधुर चन्द्रिका
संसारक शत-शत दृग उत्सुक ।।

एहन इजोरिया राति फेर की
आएत एहि नश्वर भूतल मे ?
फेर मिलत संयोग एहन की
नदी आर नावक अंचल मे ?

युग-युग धरि तों क्षुधित-पिपासित
रहलह, जीवन दुखो बितौलह ।
आबहु तँ तों हँसऽ, आइ धरि
अश्रु बहा कऽ की तों पौलह ?

मधुयामिनी

नयन फोलि कऽ चिड़ै तकै अछि,
की भिनसर तँ नहि भऽ गेल ?
एहन ज्योति, जे उषागमन कें
नभ मे आभासित कऽ देल ।

तों चकोर बनि खा न अग्नि-कण,
चन्द्र - सुधा सँ तृषा बुझावह ।
ई मधुऋतु, मधुमयी यामिनी
मुक्त कण्ठ सँ तान लगावह ।

अरुणोदय सँ पूर्व लूटि लै,
शोभा - सिन्धुक हीरा - मोती ।
नहि तँ फेर न मिलतह रजनी,
उड़ि जैतह ज्योत्स्नाक कपोती ।

चंचल जीवन, चंचल यौवन,
चंचल चंद्र, चन्द्रिका चंचल ।
चंचल प्राण हमर तों, भरि लै
हँसि हँसि आइ फूल सँ आँचल ।

१६४४

अभियान

बाजि रहल अछि डंका, रहि-रहि
गरजि रहल अछि तोप।
समर-देवता आइ स्वदेशक
कैलन्हि अछि रण - कोप।
बरजोरी लादल अछि भारत–
शिर पर ई संग्राम।
बलधकेल कैलक अछि दुश्मन
जगमे जे बदनाम।
सीमा पार बढ़ल अछि देशक
निर्भय वीर जुआन।
विजय हमर निश्चत अछि रणमे
पछड़त पाकिस्तान।

अभियान

देशक जे अविभाज्य अंग, से

देशक प्राण - शरीर

छीन खकै अछि के भारत सँ

केसरिया कश्मीर ?

औ देशक रणवीर सन्तरी,

करू समर-अभियान ।

शत्रु - सर्प - मुँह चूरि करू

भारत-स्वदेश-जयगान ।

ई अवसर नहि फेर भेटत,

नहि फेर भेटत ई मान ।

भारत-जननी मांङि रहल छथि

आइ अमर वलिदान ।

उठू, उठू हे भारत - प्रहरी,

जागू भारत-भक्त ।

नहि स्वतंत्रता क्यो पबैत अछि

बिना चढ़ौने रक्त ॥

आकाशवाणी-भवन, पटना ।
१६ सितम्बर १९६५

स्वदेश-वन्दना

हे जन्मभूमि भारत,
हे मातृभूमि भारत,
हे पुण्यभूमि भारत,
हे कर्मभूमि भारत,
निशिदिन अहाँक अविचल हम अर्चना करै छी ।
पावन अहाँक रूपक हम वन्दना करै छी ।।
हम वन्दना करै छी ।।

महिमा अहाँक माटिक अविदित कि अछि भुवनमे ?
लेबाक जन्म काँक्षा छनि देवलोक मन मे ।
अवतार ली, सिहंता होइछनि जगन्नियलोक,
तकरे जनम – जनम हम कामना करै छी ।।
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करै छी ।।

स्वदेश-वन्दना

जागल जतऽ प्रथम छल रवि - प्रात देखि प्राणी ।
फूटल प्रथम जतऽ छल शिशु-सभ्यताक वाणी ।
से देश थिक हमर, जे पृथ्वीक छल शिरोमणि ।
भू – स्वर्ग फेर होयत, हम कल्पना करैं छी ॥
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करैं छी ॥

रवि-शशि जकर उतारैं नित जाइ आरती छथि ।
स्तुति मे सदैव निरता सुरलोक–भारती छथि ।
सम्पूर्ण शास्त्र अधिकृत, सम्पूर्ण शस्त्र करगत ।
जे देश थिक, हमर ओ, हम भावना करैं छी ॥
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करैं छी ॥

गंगा जतऽ प्रवाहित छथि पुण्यतोय - धारा ।
जे भ्रान्ति - तम - निशामे ध्रुव लक्ष्यकेर तारा ।
प्रहरी जकर हिमालय, सागर चरण पखारय ।
हम ओहि दिव्य भूमिक आराधना करैं छी ॥
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करैं छी ॥

कश्मीर अछि हमर ओ, कैलास - मानसर ओ ।
ककरो कि दऽ सकैं छी अप्पन बनाओल घर ओ ।
जे शत्रु बनि अबैं अछि, स्वागत सहर्ष तकरो ।
तरुआरि सँ समर मे हम घोषणा करैं छी ॥
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करैं छी ॥

हम सत्यकेर सैनिक, हम संस्कृतिक पुजारी।
जीवन हमर अहिंसा, हम शान्ति-शील - धारी।
इतिहास कहि रहल अछि, भुजशक्ति अछि हमर की ?
ललकारि कऽ जखन हम रण - गर्जना करै छी ॥
हे जन्मभूमि भारत, हम वन्दना करै छी ॥

स्वाधीनता हमर अछि अधिकार जन्मजाते।
के दस्यु लऽ सकै अछि एकरा उधारखाते !
हम एक्य-सूत्र बान्हल जन कोटि-कोटि वासी;
युग आइ रचि रहल छी, नव सर्जना करै छी ॥
हे जन्मभूमि भारत हम वन्दना करै छी ॥

पटना,
६ अगस्त १६६६

आधुनिका

यौवराज्यक देहरी पर पैर रखितहि
आइकाल्हुक बालिका भऽ जाइछ चंचल ।
करऽ लगइछ मन-मनोरथ-भृंग गुनगुन,
उड़ऽ लगइछ वायुमे नाइलीन—अंचल ॥

हर लता देखैत अछि तरुकल्प—सपना ।
हर कुमारक स्वर्ग जगमग षोडशी सँ ।
हर किशोर क आँखि मे नव-नव किशोरी ।
हर किशोरी कम न कनिको उर्वशी सँ ॥

पूर्णिमा ज्योत्स्ना-गगन मे बिहुँसि जाइछ।
गन्धरूपक एक वातायन फुजैत अछि।
बाग, वन, क्यारी, कुसुम-केसर खिलै अछि ।
हर दिशा रँगीन देखऽमे अबै अछि ॥

मालती वेला, निशागन्धा-सुरभि सँ
वहय लागैतछि पवन पागल विजन-वन ।
झनुक-झुन झनकार कऽ पायल बजैतछि ।
मगट्टगी कें देखि आहत होइछ लोचन ॥

एक दिन सब क्यो बनै अछि छत्रधारी ।
एक दिन रानी बनै अछि हर कुमारी ।
क्यो बनल तितली नचैतछि कुंजवन मे ।
क्यो बनल भमरा विजनउपवन-विहारी ॥

किन्तु सपना सत्य कौखन होइत अछि हा ।
टूटि जाइछ कल्पना कंचन-कटोरी ।
रूसि जाइछ नव सोहागक रातिए मे
हाय कनियाँ फेकि कुंकुम, पान, रोरी॥

आब ने अभिसार-चरचा, प्रेम-लीला ।
फूटि जाइछ हाय माटिक भाग्य-दर्पण ।
आब ने आनन्द ओ, मधु छन्द, कविता ।
कैल जकरा लेल हम जीवन-समर्पण ॥

लखनऊ,
१६ नवम्बर १९६१

सम्भावना

कथी पर कि कानू ? हँसू की कथी पर ?
हमर मन चलैतछि विहंगम-पथी पर।

कि जौं मोन हँसबाक हो तँ अनेरो।
कि जौं कानऽ चाही, तँ कारण घनेरो।

एतऽ बात पर बात घड़ियक घड़ी पर।
कथी पर कि कानू ? हँसू की कथी पर ?

समाचार दुःखक जँ सै सुनाबी,
सुखक तँ हजारो प्रणय-गीत गाबी।

भ्रमर पर मरू की ? कि चम्पाकली पर ?
कथी पर कि कानू ? हँसू की कथी पर ?

दुनू कल्पने थिक, मनोभावना थिक।
मनोरथ - रथी केर प्रस्तावना थिक।

किअै काटी पाकड़ ? किअै रोपी पीपर ?
कथी पर कि कानू ? हँसू की कथी पर !

हमर मन, जतऽ द्वन्द्व छुबि ने सकैतछि।
लहरि लयलिअै, किन्तु डूबि ने सकैतछि।

बहल नाव-सन जा रहल छी नदी पर।
कथी पर कि कानू ? हँसू की कथी पर ?

एरौत

१५ मइ १६६७

शपथ थिक हमर

शपथ थिक हमर, आब चलि आउ अपने ।

मिलल प्रेम-पाती,

धरकि गेल छाती ।

कि एखनो लगल अछि शनिक साढ़े साती !

कतेक भेल दिन गाम छोड़ला अहाकें ।

शपथ थिक हमर, आब चलि आउ अपने ।

शपथ थिक हमर ॥

मलिन भेल अयना,

धरल अ'छि बयना ।

अहींक नाम-माला जपै अ'छि मयना ।

बजय आधिरतिए पपीहाक पहरुआ ।

लगै अ'छि डर, आब चलि आउ अपने ।

शपथ थिक हमर ॥

उमड़ि गेल कमला;
गर्माक गेल गमला।
जुलुम-जोर करै अछि वसन्तक अमला।
जुआनीक अँचरा मे गमगम करै अछि
गुलाबक अतर, आब चलि आइ अपने।
शपथ थिक हमर ॥

जँ लायब न गहना,
न हम देब उलहना।
मगर, जँ उमरि आइ माने न कहना ?
करब की तखन ? हाए, किछू ने फुरै अछि।
देखै छी डगर, आब चलि आउ अपने।
शपथ थिक हमर ॥

लतरि गेल पानो।
फुटल अछि मखानो ॥
सोहनगर लगै अछि गायक बथानो ॥
पोसल छ' ल पड़वा, से भय गेल जोड़ा।
हमहि एसगर, आब चलि आउ अपने ॥
शपथ थिक हमर ॥

पूजाक फूल
सोहागोक कंगना
लेलक भीखमँगना ।
ससरि हाथ सँ जे हेरा गेल अँगना ।।
एही सँ बुझू भेलि दूबरि कतेक छी ?
हँसै अछि नगर, आब चलि आउ अपने ।
शपथ थिक हमर ।।

मजरि गेल आमो ।
जुआएल लतामो ।
लगन मे उताहुल अछि भेल गामो ।।
अहाँ बिनु हमर आस पूरत कहू के ?
करत कोहबर, आब चलि आउ अपने ।
शपथ थिक हमर ।।

पियासे मरै छी ।
उपासे करै छी ।
वियोगक व्यथा सँ बतासे जरै छी ।
बताहिन जकाँ हम बितावै छी रातिक
चारू पहर, आब चलि आउ अपने ।।
शपथ थिक हमर ।

शपथ थिक हमर

नै लाएब जँ साड़ी,

पढ़त क्यो न गारी।

कहत लोग एतबे, केहन छथि अनाड़ी।

मगर, जँ अहाँ, तँ फाटलो पटम्बर

करब हम गुजर, आब चलि आउ अपने।

शपथ थिक हमर।।

जे काल्हिक कनिया।

सबहि भेलि रनिया।

आ, हमरो सँ छोटहु गेली भऽ पुरनिया।।

अही संग जायब सिमरिया क मेला।

लगै अछि मकर, अब चलि आउ अपने।

शपथ थिक हमर।।

अहाँ देश बंगला।

एतऽ रूप कँगला।

तकैते रहैत अछि सदैखेन जँगला।।

नजरि लागि जायत जँ ककरो नजरि सँ,

पियब कि जहर ? आब चलि आउ अपने।।

शपथ थिक हमर।

पूजाक फूल

सुनू हे प्रवासी,
रहू जनि उदासी।
निवेदन करै अ'छि अपनेक दासी ।।
सगरि राति महकैत महुआ चुबै अछि ।
करब सुधि तकर, आब चलि आउ अपने ।।
शपथ थिक हमर ।

निहोरा करै छी ।
भरोसे मरै छी ।
अहाँ केर चरणारविन्दो पड़ै छी ।।
खुशी आब अपनेक, करुणा करी जँ,
तँ बिहुँसत अधर, आब चलि आउ अपने ।।
शपथ थिक हमर आब, चलि आउ अपने ।।
चलि आउ अपने ।
चलि आउ अपने ।।

लखनऊ,
सितम्बर १९६२

मेघ पड़य छै

मेघ पड़य छै, बूंद झड़य छै,
नाचय छै मन - मोर रे।
कोन प्रिया केर काजर -आँखि मे
आइ भरल छै नोर रे।

कारी - कारी घटा उठय छै
पाकल जामुन रंग केर।
चमकय छै बिजुरी बिजुवन मे,
सुधि न रहय छै अंग केर ।।

छने ईजोत, अन्हार छने मे,
बुझि ने सांझ कि भोर रे।
मेघ पड़य छै, बूंद झड़य छै,
नाचय छै मन - मोर रे।।

पूजाक फूल

कुसुम-लता अवनता पिबय छ
बिहुँसि-बिहुँसि रस-धार रे।
अपनहि कर सँ जनु पहिरावय
छ प्रिय मुक्ताहार रे।

आबि रहल छ की ककरो
मनराखन माखन-चोर रे!
मेघ पड़य छै, बूंद झड़य छै,
नाचय छै मन-मोर रे॥

डोलि रहल छै झिहिर-झिहिर
मधु-मातल सरस बतास रे।
काँपि रहल छै सिहिर-सिहिर
हरियायल आमक पात रे।

जकर कंत भेल चान, कनय छै
तकर हियाक चकोर रे।
मेघ पड़य छै, बूंद झड़य छै,
नाचय छै मन मोर रे॥

लखनऊ
७ अप्रैल १९६१

—::०::—

वर्षागम

आइ वर्षागम प्रथम आषाढ मासक श्याम ।
उड़ि रहल हो जेना कज्जल-कूट नव उद्दाम ।
तीक्ष्ण ग्रीष्मातात सँ संतप्त छल जे देह,
आइ शीतल भेल, बरिसल मेघराजक नेह ॥
सोन्ह सौरभ सँ प्रहर्षित माटि, वन, पथ, ग्राम ।
आइ वर्षागम प्रथम आषाढ मासक श्याम ॥

पलहि विद्युत-हास, दिशि-दिशि मे प्रखर आलोक ।
पलहि सूचीभेद्य तिमिराच्छन्न संसृति-ओक ॥
जेना टक्कर लऽ रहल हो दिशा-दन्ती घोर ।
मारि कऽ चिग्घाड़ि चाहैत हो छुबऽ छिति - छोर ॥
आइ से भऽ जाकु, जे भवितव्यता किछु होक ।
पलहि विद्युत-हास, दिशा-दिशि मे प्रखर आलोक॥

आइ आन्हर भेल धूमाकाश, छायाग्राह ।
कुंज-वन-पथ मे समीरण भेल अछि बौराह ।
दूर क्षितिजक छोर पर लटकल जेना गजशुण्ड ।।
मत्त ऐरावत रहल हो सोखि जनु जलकुण्ड ।।
बज्रध्वनि सँ बधिर पृथ्वी, चपल वारि-प्रवाह ।
आइ आन्हर भेल धूमाकाश, छायाग्राह ।।

पवन पुरिवैया झकोरल कदलिवन संत्रस्त ।
सूर्यमण्डल अछि तिरोहित राहु सँ जनु ग्रस्त ।
करुण केकीरव-ध्वनित भऽ रहल अछि प्रासाद ।
भेक, चातक, पिक सुखी मनवैत मेघाह्लाद ।
नाव पर मँझधार मे माँझी अलापय मस्त ।
पवन पुरिवैया झकोरल कदलिवन संत्रस्त ।।

आइ कलरव कऽ रहल छै राजहंसी बाल ।
उड़ि रहल छै श्वेत चन्द्रातप - जकाँ बकमाल ।
आइ उमड़ल जा रहल छै नद-नदी उद्भ्रान्त ।
शस्य-श्यामल भऽ रहल छै भूमि आँचल-प्रान्त ।
बिच्छुरित शत-शत तरंगायित विपुल सरि-ताल ।
आइ कलरव कऽ रहल छै राजहंसी - बाल ।।

वर्षागम

नाच रे मानस-मयूरी, आइ पुलकित नाच ।
प्राण-शुक, तों कविप्रियाकेर प्रणय-पाँती बांच ।
रूप - यौवन - वारुणी सँ मस्त छ संसार ।
मेघ-ऊपर मेघ करइछि आइ जनु अभिसार ।
पंचबाणक बाण पाँचो प्राण मे जनु आँच ।
नाच रे मानस-मयूरी, आइ पुलकित नाच ॥

आइ गा रे कण्ठ मुक्तक, आइ गा रे गान ।
आइ भरि ला अँछिजल सं चिर-पिपासित प्राण ।
आइ भासऽ दे गगन मे मर्मरित आनन्द ।
आइ फूटऽ दे अनाहत रूप - बासल छन्द ।
माथ पर ले तानि शीतल मेघतान - वितान ।
आइ गा रे कण्ठ मुक्तक, आइ गा रे गान ॥

लखनऊ,
१५ जून१६६१

—::०::—

पावस - प्रसंग

कोन रूपसीक काजर-आँखि मे आइ भरल अछि नोर ?
कानि रहल अछि के विदेशिनी कान्त-वियोग-विभोर ?
मसिक कूट उड़ियायल जायत हो जनु अति गतिमान ।
बैसि पक्षधर प्रबल अश्व पर पवनक गरुड - समान ।
चमकि रहल अछि बिजुरी, बादर गरजि रहल अछि घोर ?
कोन रूपसीक काजर-आँखि मे आइ भरल अछि नोर ?

रिमझिम-रिमझिम बरसि रहल अछि रहसि-रहसि जलधार।
गाबि रहल अछि बिहुसि सुन्दरी श्यामा मेघ - मलार ।
फुलल कदम्बक अंग-अंग, सर-केसर चलल अबन्ध ।
दिग्दिगन्त मे मधुआयल अछि विकच केतकी - गन्ध ।
पुलक-मुकुल सँ भरल लता-तनु, पहिरि मोति जल-हार ।
रिमझिम-रिमझिम बरसि रहल अछि रहसि-रहसि जलधार।

पावस - प्रसंग

कलरव कऽ कलहंस-मालिका लाँघि चलल आकाश ।
नील सरोवर मे जनु विकसित श्वेत-सरोजक हास ।
शंकर--जटाजूट मे जनु हो भागीरथी—तरंग ।
सजल मेघ शोभित अछि तहिना शुभ्र बलाका-संग ।
गगन-गगन कें खिला रहल अछि तडित-प्रकाश-विलास ।
कलरव कऽ कलहंस-मालिका लाँघि चलल आकाश ।।

नीलाँचल फहरवैत आबि गेल स्वप्न - सुन्दरी कोन ।
उमड़ि रहल अछि कल-कलस्वर सँ कमला, कोशी, सोन ।
आम-डाढि मे झूला लगि गेल, मारुत-मन्द झकोर ।
बाजि रहल अछि यौवन-नूपुर, नाचि रहल अछि मोर ।
प्रिया-विरह मे यक्ष प्रवासी आइ पड़ल अछि मोन ।
नीलाँचल फहरबैत आबि गेल स्वप्न-सुन्दरी कोन ।

रहौ आइ ने ककरो उर मे अनपूरित अरमान ।
रहौ आइ ने ककरो चिर दिन -- दग्ध पियासल प्राण ।
आइ उमंग एते अछि जीवन - सरि मे एते हिलोर ।
लहरि-लहरि पर कोटि मनोरथ करइछ कलकल-सोर ।
मेघ - मृदंग बजै अछि, नूतन आइ सजै अछि गान ।
रहौ आइ ने ककरो उर मे अनपूरित अरमान ।।

लखनऊ,
१५ जून १६६१

घटा देखि कारी

घटा देखि कारी,
किअै मोन भारी ?
कतऽ छथि निठुर नाथ
गोकुल-बिहारी ?
घटा देखि कारी।

पवन पुरिबैया,
जुआड़िक समैया।
तुनुक छोट नैया।
लहरि बेबिचारी।
घटा देखि कारी॥

ककर आँखि काजर-
भरल नोर बादर ?
पसरि गेल आँचर,
ससरि गेल साड़ी।
घटा देखि कारी॥

घटा देखि कारी

प्रणय - पंथ पाँतर,
मिलन-स्वप्न बाँतर।
दरस लागि कातर।
विलोचन-भिखारी।
घटा देखि कारी॥

गरल भेल चानन,
भवन भेल कानन।
तकै चान आनन।
हमर मन पुजारी।
घटा देखि कारी॥

कखन ऐत शुभ क्षण,
प्रियाक पाबि दर्शन,
पुरा चौक आँगन,
चरण हम पखारी।
घटा देखि कारी॥

सुनू हे प्रवासी,
बनू ने उदासी,
हम तहाँक दासी,
कुना हाँक पारी!
घटा देखि कारी॥

एरौत,
१० मई १९६७

शारदीया

शरद-राजक शंख धू - धू - धू रहल अछि बाजि !
शारदीया राजलक्ष्मी लेल आँचर साजि
श्याम शस्यक मंजरी सँ । दहों दिशि उद्भ्रांत
मधुर मादक गन्ध मद सँ । कान्त नवदिग्प्रान्त ।
नील वर्णाभा - सुसज्जित, स्मितिमुखी वनराजि ।
शरद-राजक शंख धू - धू - धू रहल अछि बाजि ॥

मेघ मेदुर मंद्र स्वर सँ कैल जे निर्घोष ;
आब मन्दाक्रांत भऽ गेल, रुद्र भैरव - रोष ।
व्योम उद्वेलित प्रकम्पित भेल जे दुर्वार ,
दीप्त विद्युन्मणि - प्रभा सँ, चमत्कृत संसार ;
आइ भऽ गेल से तिरोहित कऽ विकल हकरोस ।
मेघ मेदुर मंद्र स्वर सँ कैल जे निर्घोष ॥

शारदीया

प्रात - वातायन फुजल जनु स्वर्ण - शोभागार !
झलमलायत श्याम दुर्वादल नवल सुकुमार
तुहिन-कण-मुक्ता-निकर सँ रवि-किरण - विस्फीत।
कुंज-वनमे भऽ रहल झंकृत शरद - संगीत॥
कऽ रहल अछि प्रकृति वासक-सज्जिका शृंगार।
प्रात - वातायन फुजल जनु स्वर्ण - शोभागार॥

मोर थाकल नाचि कऽ, मंडूक गेल पाताल।
मानसर चलि गेल परदेसी मरालक माल।
सुनि पड़ै अछि ने कतहु उद्दाम झंझा-राग।
भेल अन्तर्धान नभसँ इन्द्रधनुषक बाग।
फुल्ल नीलोत्पल सुरभि सँ भेल गमगम ताल।
मोर थाकल नाचि कऽ मंडूक गेल पाताल॥

उत्तरापथ सँ अयाचित आबि खंजन बाल।
चालि ठुमुकी चारु चंचल दऽ रहल अछि ताल।
उदित कुम्भज आइ सोखल पूर्ण पंथक नीर।
भेल निर्मल जल सरोवर, जाह्नवी गम्भीर !
आइ पाहुन नाचि आँगन मे, पुछै छथि हाल।
उत्तरापथ सँ अयाचित आबि खंजन - बाल॥

आइ मन - मानस तरंगित, प्राण मे उल्लास !
मेघ - घोघट मुक्त छायापथ - खचित आकाश ।
वैजयन्ती शरत-विजयक उड़ि रहल अछि श्वेत ।
आइ काशक हास मे विजयाक जनु संकेत ॥
बिच्छुरित आनन्द सँ दिग्बधू छोड़ल श्वास ।
आइ मन - मानस तरंगित, प्राण मे उल्लास ॥

झड़य लागल अहल - भोरे फूलि हरसिंगार !
करय लागल कमल दल पर भ्रमरदल गुंजार ॥
नील कुसुमक रेशमी सम्भार - सँ अवदात
नमित अपराजिता लतिका केर भेल मृदु गात ॥
बजय लागल आगमन - सुरमे प्रभातक तार ।
झड़य लागल अहल-भोरे फूलि हरसिंगार ॥

लखनऊ
२४ सितम्बर १९६१

यौवन

विकसित वसन्त-वन मे कोमल किशोर किसलय ।
के छी अहाँ ? कहू तँ ।
आनन्द-मग्न क्षण मे विचरण करैत निर्भय
हे ठाढ कनि रहू तँ ।
सुरभित मलय-समीरण शीतल झड़ैत मधुकण
हँसि-हँसि नहा रहल छी ।
सर्वत्र रूप पावन उन्मुक्त स्वस्थ जीवन-
धारा बहा रहल छी ।

छल-छल छलकि रहल जे कल्लोल-रस तरंगित
कंचन-कलश भरल अछि ।
पल-पल बहकि रहल जे सौन्दर्य-घट सुगंधित
मन ओ हमर हरल अछि ।
सुकुमार शील - कोमल चंचल-अधीर विस्मय
विगलित भुवन-भुवन मे ।
कलरव करैत निश्छल अपनेक पूछि परिचय
खग-कुल विकल विजन मे।

सुन्दर सरस सुहासी अनुपम अहाँक आनन
कन्दर्प - दर्प - हारी ।
हे दूर-देश वासी, पुलकित कदम्ब - कानन,
चानन ललाट - धारी ।
सहकार- मंजरी सँ केसर - सुधा झड़ै अछि,
वसुधा हँसैत खल-खल ।
मिलनक प्रथम घड़ी सँ किछु बूझि ने पड़ै अछि,
के छी अहाँ गगन - फल ?

निर्धूम छी अनागत कर्पूर - दीप - ज्वाला
मणि - पातर मे जरै छी ।
हे हे अतिथि समागत, मन्दार - पुष्प - माला
कल कण्ठ मे धरै छी ।

चंचल चरण चलै छी लोकाभिराम पथ पर
उड़बैत जय - पताका ।
शशिकान्त हम गलै छी मधु पूर्णिमाक रथ पर
अवलोकि रूप - राका ।

ऋषि कण्व केर आश्रम मुग्धा शकुन्तला छै ।
दुष्यन्त छी कि अपने ?
ई अन्तहीन दिग्भ्रम व्याकुल ललित कला छै,
साहित्य - सत्य सपने ।
उन्मत्त जन्म-जन्मक अद्भुत जगत - समस्या,
हिम मोह - अन्ध वन्या ।
युवराज स्वप्न-देशक करइछ कठिन तपस्या
कत पार्वती सुकन्या ।

वर्षा, बिहाड़ि, पाथर संकेत पाबि मादक
बरसै, बहै, पड़ै छै ।
मुरली सुनैत मातर लगबैत लाल जावक
लाजे लता मरै छै ।
हीरा, प्रवाल, मोती मन ने कपोत भावय,
अभिमान भेल भारी ।
जौं मानिनी कपोती मन्दिर समीप आवय,
हम आरती उतारी ।

ब्याजक कहू कथा की हम मूलधन गमौने
जीवैत छी जगत मे ।
मन मे हमर व्यथा की ? की हैत गीत गौने ?
जे गौल छी विगत मे ।
सम्राट् चक्रवर्ती शत-शत ययाति कामी
छथि द्वार पर भिखारी ।
आकाश आर धरती त्रैलोक्य केर स्वामी
अपनेक छथि पुजारी ।

सरिता, समुद्र, पर्वत, मस्ती बहैत निर्झर,
कान्तार वन बिछौना ।
भूगोल भेल करगत, इतिहास दास अनुचर ।
विज्ञान अछि खेलौना ।
नन्दन-निकुंज - कुंजर लीला-कमल-विपिन मे
आन्हर-बताह भेलछि ।
जनु पुंज-पुंज मधुकर उत्सव-विशेष दिन मे
गुंजन करैत गेलछि ।

कत मेनका-घृताची करुणा-कटाक्ष-आहत
रुनझुन करैत नूपुर ।
एकान्त मे अयाची अनुभव करैत छथि कत
रोमांच - हर्ष - अंकुर ।

स्वीकार हम करै छी विजयी अहाँ अमर छी,
चिर कल्पना - विहारी ।
शिर पर मुकुट धरै छी, सिंहासनक हमर छी
कवि - उत्तराधिकारी ।

भ्रू-भंगिमा हलाहल, पदचाप भूमिकम्पन,
मुसकी जकर प्रभाती ।
उच्छिष्ट अछि अछिंजल, अधरोष्ठ मे अमृत-कण,
आक्रोश विश्व - घाती ।
माङथि चरण-सुपल्लव, उन्मद-मदन-मनोरथ-
मण्डन मथित मुरारी ।
की हे कुमार-सम्भव, अंगीकृतार्थ मन्मथ,
मोहित भेला पुरारी ।

सतरंग सुर-धनुष छी, विद्युत-शिखा मनोहर,
पाथोद व्योम - चारी ।
सर्वज्ञ किम्पुरुष छी, आधा शरीर ईश्वर,
आधा शरीर नारी ।
सुर भारतीक वीणा वाणी जतऽ करैअछि
झंकार प्राण - प्रीता ।
अपराजिता नवीना पद-वन्दना करै अछि
अपनेक चिर - विनीता ।

कोकिल - कलाप - कूजित वन-वल्लरी - भवन मे,
पाटल - सुमन - शयन पर
राखू त्रिलोक - पूजित मधु-यामिनी मिलन मे
कोमल चरण अगोचर ।
स्वच्छन्द छन्द-लय मे स्वागत अहाँक प्रति क्षण
जय - घोषणा करै छी ।
शाश्वत रहू प्रणय मे यौवन, अहाँक, यौवन,
शुभ कामना करै छी ।

एरौत,
१६ मई १९६७

सान्त्वना

छोट छिन-सन बात पर
ने छोट मन अपने करी ।
ने छोट मन अपने करी ।।

की भेलै, जे चोट लागल ?
मर्म मे अभिमान जागल ?
की भेलै, जे भावना
अपनेक बुझलक ने अभागल ?
योग्य नहि अपनेक तामस;
जे व्यर्थे आनक मरी ।
ने छोट मन अपने करी ।।

जँ न क्यो परितोख राखल,
कटुवचन, अनरीत भाखल ।
रुचिक अति विपरीत रचना
देखि, फल रसहीन चाखल ।
दू किनारक बीच सँ,
बहि रहल जीवन-निर्झरी ।
ने छोट मन अपने करी ।।

पूजाक फूल

बूँद कें सागर बनौने,
गोट कें पर्वत रचौने,
हयत की फल माथ पर
संसार ई सौंसे उठौने ?
रहौ भावुकता एहन
काते, जकर तिल-गुड़ भरी ।
ने छोट मन अपने करी ।।

देवतो घर जाथि घूरल,
माथ सोझक जाय मूड़ल ।
खेत महिषी खाय, आ
मुँह जाइतछि पड़रूक चूरल ।
लोक मे चरितार्थ देखी,
ज्ञान की ताखे धरी ?
ने छोट मन अपने करी ।।

ककर सब टा आस पूरल ?
ककर सब दिन प्राण जूड़ल ?
कोन ओ जलपोत, जे
संसार-सागर मे न बूड़ल ?
मरण-पाहुन जे न देखल,
से केहन अछि देहरी ?
ने छोट मन अपने करी ।।

सान्त्वना

मेघ जयतैं, रौद ऐतैं ।
राति-दिन झाँखी देखैतैं ।
लहरि अहिना अबैत-जाइतैं
समय - सागर मे समैतैं ।
चाक ई घुमिते रहत
नचबैत सुख-दुःखक घड़ी ।
ने छोट मन अपने करी ।।

मीठ आवय, तीत आवय ।
हार आवय, जीत आवय ।
द्वार पर स्वागत करू हँसि
शत्रु वा जे मीत आवय ।
जे पठावथि प्रभु अयश-यश,
अमृत वा विष-वल्लरी ।
ने छोट मन अपने मरी ।।

एरौत
१४ जून १६६७

कोना रहि सकै छी

ओना तँ अनेको गृह - कार्य मे रत
लहरि हम वियोगक निठुर सहि सकै छी ।
मुदा जँ घड़ी - पल न एकान्त मानय ।
कहू, मौन - मन हम कोना रहि सकै छी ?

अहाँ संग रहबै ओना तँ, हजारो
अभावक अन्हरिया बिहुँसि खेपि देबै ।
अचानक कोनो चान ताकय मनोरथ ।
मचानक लता, तँ मसि लेपि देबै ।

प्रणय जँ प्रलय धरि प्रतीक्षा करय तँ
परिक्षा-अनल मे सदा दहि सकै छी ।
मुदा जँ घटा पथ-विजन मे न मानय,
कहू, मौन-मन हम कोना रहि सकै छी ?

विरह-भीत कातर उदासीन क्षण मे
हमर चेतना कें निराशा धरै छै ।
कुसुम कामना ने कतहु एक फूलय,
कतहु एक पंछी न कलरव करै छै ।

उड़ावैत पछवा हवा संग कहुना
खसल पात सूखल जकाँ बहि सकै छी ।
मुदा, जँ वसन्ती समीरण न मानय,
कहू, मौन-मन हम कोना रहि सकै छी ?

जतऽ मरुधरा मे न बूंदक भरोसा,
ओतऽ यदि पियासल रही तँ व्यथा की ?
जतऽ एक पातो न पुरिवा मे डोलय,
ततऽ प्रेम - चर्चाक कोनो कथा की ?

ओना तँ प्रवासी पथिक प्राण - वन कें
समाचार पत्रो - लिखित कहि सकै छी ।
मुदा देवता जँ सम्मुख न मानय,
कहू मौन मन हम कोना रहि सकै छी ।

नवल आम्र-पल्लव लदल मंजरी सँ,
सरभि सँ तरंगित दिशा, कुंज उपवन ।
कुहू-रव पिकी कऽ रहल हो मनोरम,
भरल हो विपिन मे भ्रमरकेर गुंजन ।

पूजाक फूल

एहन जँ समय हो, करत के तपस्या ?
कदाचित पखानक चरण गहि सकै छी।
मुदा नाम लऽ जँ बंशी न मानय,
कहू, मौन-मन हम कोना रहि सकै छी ?

कखन रंग लाओत फागुन न जानी,
कखन भाङ पड़िजै इनारे-इनारे।
कखन आँखि मे लाल डोरी भुलावय,
कखन नाव बहि जै किनारे-किनारे ?

ओना तँ अनेरो अचल बेसि घर मे
अगोचर विचारक दही महि सकै छी।
मुदा, जँ अहीरऽक होरी न मानय,
कहू मौन-मन हम कोना रहि सकै छी।

एगौत,
७ फरवरी १९६७

अश्रु-मोचन

दुखी सन हमर मन किअै तों रहै छ ।
नयन सँ किअै नोर झड़झड़ बहै छ ।।
विपति कोन भारी
एहन जे न टारी?
न मुँह सँ उचारी, अकारण सहै छ ।
दुखी सन हमर मन किअै तों रहै छ ।।
जडीभूत शापें ,
कँपै छऽ विलापें ।
ककर घोर तापें हृदय मे दहै छ ।
दुखी सन हमर मन किअै तों रहै छ ।।
व्यथा - भीत कातर,
बनल मौन पाथर ।
पढ़ल कोन आखर, न किछुओ कहै छ ।
दुखी सन हमर मन किअै तों रहै छ ।।
अभय-चक्र - धारी,
सकल शोक - हारी,
किअै ने मुरारी - शरण कसि गहै छ ।
दुखी सन हमर मन किअै तों रहै छ ।।

एरौत,
१३ जून १६६७

शरणार्थी

की, कहू अहीं भगवान, करू ?
छी कतऽ अहाँ? के कहत? कहाँ
अपनेक आइ संधान करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

दीपक विश्वासक दुर्बल अछि।
सन्देह समीरण चंचल अछि।
कखनो बुझि जाइत अछि, कखनौ
जगमग प्रकाश सँ उज्ज्वल अछि।
अपनेक कृपा-करुणा खातिर
हम की अबोध - अनजान करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

हम मात्र नाम धरि सूनल अछि।
किछु अपन अनुभवो गूनल अछि।
थिर मुदा मोन ने अछि रहैत ,
सम्पूर्ण शास्त्र हम धूनल अछि ।
नब बात कहत के हमरा, जे
हम आब ओकर दिस कान करू?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

पुस्तक - अवलोकन कालक मन
जे सत्यक स्वर मे सानल सन,
करइछ अनुमोदन - अनुभव जे,
से लऽजाइछ व्यवहारक क्षण ॥
सब ग्रंथ पढ़ल भुलि जाइत अछि,
हम अचल कोना ओ ज्ञान करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

कखनो संकल्प विकल्प - भ्रमित
मानस कखनो संघर्ष - श्रमित,
भव - जलधारा मे भसियाएल
हम जाइत छी एकान्त - दमित ।

दुनियाँ सँ ठकल - जकां सबतरि

आशा लऽ कोन विहान करू ?

की, कहू अहीं भगवान, करू ?

सत्संग रहै अछि जावत धरि,

सद्वृत्ति रहै अछि तावत-धरि।

विस्मरण होइत अछि तखनहि,

आबै अछिजखन प्रपंच-लहरि।

साक्षात् कतओ ने देखैछी,

पथ कोन ? कुम्हर प्रस्थान करू ?

की, कहू कहीं भगवान, करू ?

क्यो बाजै छथि जीवन-स्वामी।

क्यो सुनबै छथि अन्तर्यामी।

क्यो मन्दिर मे पधरौने छथि,

संकेत करै छथि निष्कामी।

जौं आतमा सँ ने भिन्न अहाँ,

हम कुना कतऽ आह्वान करू ?

की, कहू अहीं भगवान, करू ?

ई नहि जे हम नहि जानैत हो।

ई हो नहि जे नहि मानैत हो।

भऽ जाइत अछि कखनो की, ने
हम अपने कें पहचानैत हो ।
ई चढ़इत - उतरैत प्रेमक ज्वर,
की एकरा पर अभिमान करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

रहि - रहि कऽ बैसि हृदय जाइछ ।
भऽ मन मे विजयी भय जाइछ ।
अपनेक कृपा - करुणा - प्रति, हे
करुणापति, भऽ संशय जाइछ ।
हमरा सँ साधन पार लगत
की जे हम जप, तप, ध्यान करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

हम निष्फल छी किछु करबा मे ।
निर्बल छी यम सँ लड़बा मे ।
हम अपन पुण्यबल सँ असक्त
संसार - सिन्धु कें तरबा मे ।
किछुओ ने बूझि पड़ै अछि, जे
की अरजू हम, आ की दान करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

ई भाग्य हमर, जे किछु बूझल ।
कनडेरियो आँखी, तेँ सूझल ।
की कर्म हमर, जे अपने कें
बिसरा कऽ अपनहि सँ जूझल ।

सुख - सुविधा - स्वार्थक गलती मे
गलइत छी, की गुण-गान करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

की प्रबल कर्म-फल भोग हमर ?
की अपने केर कृपा निर्भर ?
की हमर दोष- अघ जीतै अछि ?
अपनेक सहज की करुणा-कर ?

हम अपराधी मारल जायब,
यदि प्रस्तुत न्याय-विधान करू?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

हम पापक भार उठौने छी ।
बल, साहस, धैर्य गमौने छी ।
तेँ आयल छी शरणागत भऽ,
चरणामृत लै मुँह बौने छी ।

जौं अपनहि करनी सौं भरनी,

शरणार्थी

हम कुना अपन कल्याण करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

नहि बनतै, जौं गनबै औगुन ।
ई मैल कोन धोतै साबुन ?
संग फूलक कीट चढ़ै छै सिर,
आटा संग पीसल जाइछ घुन ।
मन-रंग धोइने छूटत ने,
हम की लऽ कऽ निर्वाण करू ?
की, कहू अहीं भगवान, करू ?

एरौत,
१५ मई १९६७

मैथिली

कोन चानक तों चकोरी !
बनल छऽ, हमरो कहऽ तँ।
आइ हे मिथिला - किशोरी ॥
कोन चानक तों चकोरी !

क्षितिज पर लोचन टिकल छऽ।
मांङ पर मोती बिकल छऽ।
मुक्त कुन्तल-पाश, फूटल
कुंकुमी आशा - कटोरी।
कोन चानक तों चकोरी !

मैथिली

पवन दक्षिण बहि रहल अछि ।
नव कथा किछु कहि रहल अछि।
के एहन निष्ठुर, मृगी कें
देल रेशम केर डोरी ?
कोन चातक तों चकोरी ?

की गेला परदेश प्रियतम ?
की भेला प्राणेश निर्मम ?
हाय, की भऽ गेल सुतले मे
हृदय सँ हार चोरी ?
कोन चानक तों चकोरी ?

बीति जायत विरह - वेला ।
फेर लागत रूप - मेला ।
फेर आयत कुंज मे
ऋतुराज, खेलत रंग-होरी !
कोन चानक तों चकोरी ?

१६ नवम्बर १९६१

पुरिबा बसात

पुरिबा बसात लपटैत आइ अछि भोरे सं,
धूरा-गुलाल सँ मुट्ठी भरि खेलै अछि होरी ।
ताड़क छज्जा हड़-हड़ करैत छै निर्जन मे ।
मानू, बजैत छै ढोलक, मृदंग, डंफा जोड़ी ।

पुरिबा बसात मे पात पीपरक जकां चपल
मन हमर करैतथि किऐ कुनादन रहि-रहि कऽ ?
की किछु अभाव ? की सुन्न धरक कोनो कोना ?
की कुहू-कुहू मे कोकिल उड़ि जाइत अछि कहि कऽ?

ई बैशाखक अलसैल दुपहरी वेला छै ।
आदित्य-चक्र अछि ठीक माथ पर ज्वालमय ।
छायो भऽ गेली संग छोड़ि कऽ लुप्त कहूँ ?
मधुमास-वक्ष पर ग्रीष्म करै अछि नृत्य-विजय ।

पुरिबा बसात

कखनो जँ बेलक सौरभ सँ गमगम करइत
आबैतछि कोनो झोंका पवनक अलबतहा।
मुरुझैल हमर रुधिरो मे हलचल मचि जाइछ।
सठियैलो तन-मन मे लागय यौवन-झटहा।

चटि गेल इनारक लहरा पर करइत भन-भन
जल-हेतु बूंद-भरि सुरक पियासल मधुमाछी।
छत्ता उजाड़ि, रस लूटि चोर के भागि गेल ?
टिकुलो ने भेल कि झड़कय लागल अछि गाछी।

पुरिबा बसात मे बैसल छी पूरब मुँह कऽ
पुरबारी ओसरा पर पुरबे मूँहक घर मे।
छी ताकय चारू कात चकित हम उत्कंठित
संदेश कोन पुरिबाक अग्र-गामी स्वर मे ?

खिड़की-केबाड़ फट-फट कपार सब पटकैतछि,
सन-सन करैत अछि सनकल-सनकल बँसबाड़ी।
पनिभरनी जाइत बहकि कतहु अछि पनिघट सँ।
कांटा-कूसा मे ओझड़ा जाइत छैक साड़ी।

सपनाक चित्र-माला, पोथी हम फोलै छी,
सड़-सड़ उड़ि जाइत पात-पात अछि उपवन मे।
तरबाक लहरि चढ़ि जाइत अछि तखन माथे,
हम नहि जानी, ककरा सँ खिसिआयल मन मे?

पूजाक फूल

पुरिबा बसात मे आइ यँह हम सोचैं छी,
ऋतुराज भिखारी बनल किऐ अछि जनपथ पर ?
मधुमासो मे दिन आवा भेल कुम्हारक जे,
से कोना चढ़त सुकुमार तरुण पुष्पक रथ पर ?

ई अजगुत नहि जे मीन पियासल सागर मे,
अछि नलिन-मुख मुरुझायल सलिल-सरोवर मे।
मेघक अंको मे बिजुरी कें मानू लागि अबै ।
जँ चिन्ता - कीट बसय जा कल्पो तरुवर मे ।

पुरिबा बसात मे आइ हमर मन नहि बस मे ।
किछु कचर-बिचर मेघो करैत अछि अम्बर मे ।
के जानौ, कौखन पिघल जाए ई सोना - दिन ?
पुरिबा बसात ई बदलि जाए आ अन्हर मे ।

के कहौ, फेर तँ की भऽ जायत अनहोनी ?
बैशाख-मास की बनि जायत साओन - भादो ।
जे धूरि आँखि मे भरि अबीर फगुआ खेलय,
से बनै रंग - पिचकारी सँ कीचड़ि - कादो ।

पुरिबा बसात मनहूस एहन की सरिपहु अछि ?
जे बना दैत अछि योगी प्रणय - वियोगी कें ?
प्राचीन लोक सँ सुनैत यँह हम आबै छी ?
पुरिबा बसात जुनि लागय कोनो रोगी कें ।

एरौत,
८ मई १९६७

—::०::—

गीत

लोचन हमर चकोर रे आनन तव चान ।
भेल निहारैत भोर रे रातुक नहि भान ।।
नाचि उठल मन मोर रे छवि मेघ-वितान ।
बरसि गेल घन घोर रे भीजल परिधान ।।
यौवन उमंग अथोर रे लागत पंचबाण ।
प्रथम पुलक हिलकोर रे हरि लेलक ज्ञान ।।
लूटल मनसिज-चोर रे तन, मन, धन, मान ।
विधि भेल केहन कठोर रे जे कैल बिहान ।।
बहै नयन सँ नोर रे प्रिय सँग गेल प्राण ।
विरह दुखक नहि ओर रे सुख सपन समान ।।

एरौत,
१० मई १९६७

Scanned by CamScanner

गोहारि

अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन - पिपासी।
कहाँ पी ! कहाँ मंत्र गूंजल भुवन भरि।
मुदा नहि जगै छथि अम्बर - निवासी।

उमड़ि गेल साओन, भादव बरिस गेल,
मुदा कंठगत भेल एको न जल - कण।
कतऽ गेल स्वाती - कृपा केर वारिद।
हमर प्राण व्याकुल रहैत अछि प्रतिक्षण॥

दिशा धूरि - धूसर, धरा भेल ऊसर।
भरल कुंज-वन मे अमंगल उदासी।
अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन-पिपासी।

गोहारि

सरोवर - नदी - कूप मन ने भवै अछि ।
पयोनिधि भरल तँ मुदा खार पानी ।
मनोरथ तकैतछि गगन-दिश विकल भऽ ।
पकड़ि छांह मेघक रहलि कानि वाणी ।

उदय भेल पातक पुरा कोन जन्मक ?
मिलल वृत्त चातक अगोचर अकाशी ।
अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन - पिपासी ।।

जगत-सिन्धु मे हम बहल जा रहल छी ।
कतहु ने भेटैतछि किनारक सहारा ।
तरंगावली घोर गर्जन करैतछि,
पता ने कतऽ लऽ भसा देत धारा ?

कुसुम - कल्पना - पात पतझार - सूखल ।
अगम पंथ हम आइ एकसर प्रवासी ।
अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन-पिपासी ।

हलाहल-भरल वायु-मंडल विदूषित,
जतऽ सांस लेबो कठिन भेल भारी ।
दुराचार - दावाग्नि सँ दग्ध मानव,
कतऽ छी ? कतऽ छी अहाँ चक्रधारी ?

भरोसा न कनिको कि खेपब कोना हम ?
अधोगति-तिमिर में पड़ल छी निराशी ।
अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन - पिपासी ।

कहू की कुशल ? दुर्दशा हम अपन की ?
अहीं जे विमुख भेल सूतल भवन छी ।
सुनत के कथा ? छैक ककरा हृदय ओ ?
हमर त ँ अहीं एक अशरण- शरण छी ।

नयन फोलि ताकू कनेक आइ एम्हरो ।
विदित छी अहाँ क्षीर-सागर-विलासी ।
अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन - पिपासी ?

सुनल अछि सुयश नाम अपनेक सबठां ।
उचित यँह थिक जे अपन टेक राखी ।
जटिल भेल जीवन, समस्या बढ़ल अछि,
समाधान कोनो सफल एक राखी ।

निराधार कें एक आधार अपनहि,
हवा बहि रहल अछि जगत में विनाशी ।
अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन - पिपासी ।

गोहारि

हरण शान्ति - सीताक दशमुख करैतछि ।
पड़ल आइ गजराज अछि ग्राह -मुख मे ।
उतरि गेल द्रुपदाक लज्जा सभा मे ।
सुखी कंस-शासन, परम - हंस दुःख मे ।

कपट-मृग बनल नीच मारीच घर-घर ।
नृपति भेल बक, काक वेदान्त - भाषी ।
अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन - पिपासी ।

हमर दोष देखी, तँ तारब कोना कऽ ?
चरण मे नुकायब कोना हम अभागल ?
पतित-बन्धु अपने कहायब कोना कऽ ?
कतऽ फेर जायब अहाँक गोड़ - लागल ?

अहाँ - सन अहीं छी, हमर सन अनेको
प्रणय मे पड़ल हैत पागल प्रहासी ।
अहाँक नाम लऽ कऽ कहाँ धरि गोहारत
पपीहा हमर प्राण दर्शन - पिपासी ।।

एरौत,
६ फरवरी १९६७

आकाश-दीपक

लेसती आकाश - दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ ।
आइ सँ के ढीठ बाजत फूलकुम्मरि दाइ सँ ?

भभकि उठती दाइ जाने के कखन माचिस - जकाँ ?
बनि सकै व्यवहार ककरो संग को छत्तिस जकाँ ?
दीप जारब - हेतु ककरो गेह मे छै तेल ने ।
फूलकुम्मरि गाबि झुम्मरि किऐ खेलथि खेल ने ?
की कनेको कम जनय छथि बिद्ध बाभन-नाइ सँ ?
लेसती आकाश - दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ ।

के निपुत्तर हो अलच्छी टोकि जे हुनका दिऔ ?
दीन ने ककरो, छहाछह बाजि हुनका सँ लिऔ ?
के भला बिढ़नीक खोंता हाथ सँ मर्दन करौ ?
सात पुरखा कें नरक मे ठेलि कऽ पाथर धरौ ?
मूस की कौखन सकै अछि मिला आँखि बिलाई सँ?
लेसती अकाश - दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ ।

भैरि कातिक फूलकुम्मरि दाइ रहती नेम सँ।
सान-सौकत मे कनेको कम न कोनो मेम सँ।
देखि कऽ भयभीत नेना आँखि विस्फारित रहय।
ककर साहस जे बढ़य आगाँ, मनोरथ के कहय?
जाय छनि भऽ तरा - उपरी भाइ सँ, भौजाइ सँ।
लेसती आकाश - दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ।

एक - साँझत पाक करतो भैरि दिन उपवास कऽ।
एहिना लेती, करू विश्वास, कातिक मास कऽ।
भागवत - सप्ताह सुनती तीन घंटा राति मे।
भोज देती दिन समापन भात- दालिक जाति मे।
घी, दही तँ गेल, दर्शन भेल नवका पाइ सँ।
लेसती आकाश - दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ।

पाठ कऽ हनुमान चालीसा उठय छथि एक सय।
आ कहय छथि बैद्यनाथक बम्म बारम्बार जय।
कऽ रहल जगमग दिया छनि ऊँच हुनके ताड़ सँ।
सोन बरिसय छनि प्रभाते काल हुनके चाड़ सँ।
गाँव मे के पुरख, फोरन देत जे मरचाइ सँ?
लेसती आकाश - दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ।

एक तऽ तोतराह, ताहू पर तमिल भाषा पढ़ल ।
एक तऽ अपने करैला, नीम पर दोसर चढ़ल ।
फूलकुम्मरि रेडियो छथि, बिन बजौने जे बजै ।
ई गला, ई गाल केवल फूलकुम्मरि कें छजै ।
छनि बढ़ल ठुमरी-ध्रुपद मे नाम हीरो बाइ सँ ।
लेसती आकाश - दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ ।

देह क्यो दुर्जन दिअै अपवित्र कऽ ने छूबि कऽ,
फूलकुम्मरि दाइ गंगे मे रहै छथि डूबि कऽ ।
खाय छथि अरबे, रहय सब सँ फराके छथि सदा ।
एक लोटे मे भरल छनि जीवनक सब सम्पदा ।
दैत छथि गो-ग्रास, जोड़ल स्नेह छनिहे गाइ सँ ।
लेसती आकाश - दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ ।

छैक लगले अहल-भोरे फूल हरसिंगार मे ?
आ भुरुकवा छैक उगले पूर्व-गगनक पार मे ।
फूलकुम्मरि दाइ उठती, स्नान करती धार मे ।
बैसि जयती मारि पलथी, देव-पूजागार मे ।
की कनेको रूप मे उन्नैस काली माइ सँ ?
लेसती आकाश-दीपक फूलकुम्मरि आइ सँ ।

१ नवम्बर १९६७

बैतलमार

एक बैतलमार बालक बेकहल हम
राति वा दिन बूझि ने किछुओ रहल छी।
कर्म - कोलाहल - पराजित हम पड़ायल
जाइ कोनो कुंज - वन मे बरमहल छी।

मुरलिका बजवैत हम चरवाह गाइक
जोगिनी गोधूलि - वेला मे अबै छी।
हर सदन मे दीप झलमल जगमगायत,
डगमगायत चरण स्वागत - स्वर गबै छी।

नीक ने हमरा भवन कखनो लगै अछि।
दूर वन सुनसान आकर्षित करै यै।
फुल्ल इन्दीवर - सुमन सरसित सरोवर,
भ्रमर शत - शत भ्रमण कऽ गुंजन भरै यै।

अन्तरिक्षो दऽ रहल नीरव निमंत्रण।
इन्द्रधनुषी रंग मेघक लिपि लिखल अछि।
तरुण तरुवर बाँहि - युगलक छाँह मे मधु -
मक्षिका जे उपवनक नव रस चिखल अछि।

हम सुनै छी स्वर, न जे क्यो किछु सुनै अछि ।
सब अपन चलि जाइतछि सोत्साह-पथ पर।
हम देखै छी, मालती-वन मे अबै अछि
जे नवल ऋतुराज दक्षिण-पवन-रथ पर।

हम सुनै संगीत रिमझिम छी पयोदक,
जे सरस बरसैत अछि पावन धरा पर।
हम सुनै छी, पंडुकी जे गीत गाबय
अछि चतुर्थी-मिलन-रातिक मधु-मनोहर।

छोड़ि जननी-स्नेह-अंचल हम चढै छी
जानि ने पर्वत-शिखर पर कोन भारी ?
बन्धु-पुर-परिजन बिसरि वन मे रमै छी।
जानि ने की लोग समझै अछि अनाड़ी।

दिग्भ्रमित-बौराह ककरो लेल हम छी।
मूर्ख ककरो लेल प्रेमी, मुग्ध, सनकल।
किन्तु, ककरो ज्ञात छै, जे हम किअ छी
विकल, विरही वकुल-वन मे भेल चंचल।

२५ अक्टूबर १९६७

जीवन

मानवक संसार मे चाहे समस्या जे विकट हो;
किन्तु, जीवन तँ सदा आनन्द-उच्छल स्वर भरल अछि।
जड़-विशेषक दृष्टि सँ अभिनाश चाहे सन्निकट हो।
किन्तु,यौवन तँ नवल किछु सृष्टि-रचना मे पड़ल अछि।

रुद्ध मन्दिर - द्वार कऽ आकण्ठ कुण्ठा-ग्रस्त कहुना
घोंटि जे विषमय धुंआ आ दोंक मरचाइक सहै छथि;
पात्र से करुणाक निस्सन्देह, हम अनुभव करै छी।
आत्म-हन्ता आत्म-ज्वाला मे निरन्तर जे जरै छथि।

किन्तु, जीवन तं न कौड़ी, खेल मे जकरा लुटा दी।
एक मुट्ठी भात खातिर बेच दी जकरा अभागल।
बूढ-बिसुकल गाइ ने जे, राखि दी गोरक्षिणी मे।
वा धरा दी रास कें कोनो कसाइक हाथ पागल।

फूल जे गमकैत वन-वन मे लुटावै अछि सुरभि-घट,
खिलखिला कऽ जे हँसै अछि भव-भुवन-भरि मे हृदय सँ।
भ्रमर जे गुंजन करै अछि,गीत गावय अछि विहंगम;
मग्न-मन नर्तन कलापी जे करै अछि चिर-प्रणय सँ।

बाल-लीला जे करै अछि आत्म-विस्मृत राजपथ मे,
से जनै अछि की पराभव? ग्लानि? कुत्सा? शोक? घृणा?
एक शिव कल्याणमय छथि सृष्टि मे सर्वत्र व्यापक;
कऽ रहल आनन्द छथि गिरि-नन्दिनी आनन्द-पूर्णा?

एक जीवन - तत्व अद्वय आर जे अनुपम-अनामय,
रेणु-अणु-परमाणु मे सर्वत्र समरस-सम-विभाजित ।
जीवनक संगीत निर्भय दिग्दिशा मे भऽरहल अछि ।
एक सुन्दर सत्य अछि सर्वोच्च-सिंहासन-विराजित ।

मार्गशीर्षक अंशुमाली - किरण - बर्षानन्द-दायक
व्योम सँ पृथ्वी विकल जीवन्त भेलछि प्राण-धारा ।
मन्द-मृदु मारुत प्रकृति अंचल विचंचल कऽरहल अछि।
देख तँ, भेलछि चराचर गन्ध सँ पागल - अवारा ।

आ अधम तों जे केहन, अपनहि बना कऽ भुवन-कारा,
फँसल छैं अपने मनोरथ-जाल मे चिर-जनम-मरणक ।
जाल ने टूटय, न कारावास छूटय, मुग्ध प्राणी
मोह-मद तिमिरान्ध देखय ने किरण जीवन-सुवर्णक ।

जन्म - मृत्युक दू किनारक मध्य मे जीबन नदी-जल,
कऽरहल कल्लोल अछि अविराम निशि-वासर प्रगतिमय ।
जन्म-मृत्युक मध्य रहितहु जन्म-मृत्युक द्वन्द्व मे नहि ।
नाम थिक जीवन जकर, से शक्ति अपराजेय अक्षय ।

रक्त मे जे उष्णता, उत्साह कोनो कर्म मे अछि ।
तेज वाणी मे,नयन मे दीप्ति जे विद्युत बनल अछि ।
पुरुष मे पौरुष बनल, नारीत्व नारी मे कहावय।
धर्म प्राणक जे अचल, से वैह जीवन-कण अनल अछि।

चेतना जकरा कही, वा हम कही अभिव्यक्ति जकरा,
हम महामाया कही वा ब्रह्म वा भगवान कहि ली।
भेद ने, हम जाहि सँज्ञा सँ करी अभिहित परम कें।
दूध मे हम घृत जहाँ सर्वत्र जीवन - तत्व महि ली।

मानवक संसार मे किंचित भले ने पूर्णता हो।
व्याप्त हो सर्वत्र भ्रष्टाचार, क्ष त्ज्वाला, पिपासा।
ई अनैतिकताक जे बाजार क्रय-विक्रय-कलुष अछि।
ताहि मे मानव करै अछि व्यर्थ जीवन-मिलन-आशा।

बाह्य-रूपें जगत मे भीषण विषमता व्याप्त रहितहु
एक सामंजस्यता अन्तर्निहित अन्तर्मुखी अछि।
सिन्धु-गर्जन, ऊर्म्मि - हाहाकार अवलोकन करय जे,
दृश्य ई बहिरंग केवल, से मनुज निश्चय दुखी अछि।

किन्तु, वास्तव मे न कोनो एहन कारण छै भयाकुल
जे करय मानव-मनोरथ कें प्रगति-पथ सँ निवारण।
सप्त-स्वर-मालाक सरगम मे छिपल जे रागिनी छै।
से प्रगट होइ छैक सुर-शिल्पीक आँगुर सँ अकारण।

रूप जे, क्यो देखते रहि जाय आजीवन विमोहित।
दृष्टि चाही, सृष्टि मे सौन्दर्य-सागर बहि रहल छै।
रस एहन, जे पीबि कऽ कल्पान्त धरि संतुष्टि हो ने।
प्रेम चाही, किछु कथा प्रत्येक रजकण कहि रहल छै।

शान्ति छै कोनो जकर अद्‌भुत हिमालय गिरि-शिखरसँ
क्षुद्र शिशु-संघक जकाँ संघर्ष ई मानव लगै छै।
फुलझड़ी दीपावली रातिक जकाँ अगुबम - विलोडन।
खेल कन्दुक भेल रण, चुट्टी परस्पर मे लड़ै छै।
जो विषादक वेदनो मे प्रसव - पीड़ाकें देखै यै,
जे जगत - संहार-लीलो मे शिवक दर्शन करै यै,
पीत पतझड़ मे सुनै यै जो वसन्तक आगमन-स्वर,
जे अमंगल नाटको मे भाग लऽ कऽ ने डरै यै,

सैह कोनो व्यक्ति पहुँचल देखि ई जीवन सकै यै।
पूर्ण-सार्थक, जे पराजित ने, विभाजित ने, चिरन्तन।
जे सहज-स्वाधीनता मे सृष्टि-रचना कऽ रहल अछि।
मुक्त जे अछिए स्वभावें, कोन तकरा लेल बन्धन ?

जे सहज सौन्दर्यमय, आरोग्यमय, आनन्दमय जे,
स्वस्थ अछि, आत्मस्थ अछि, जे राजनट जनरंगमंचक।
प्रेममय, उल्लासमय, उत्सर्गमय, स्वच्छन्दमय जे,
सैह थिक आत्मा हमर, प्रत्यक्ष परमात्मा प्रपंचक !

फूल मे अछि काँट, चाउर-दालि मे भुस्सी भरल अछि।
व्यर्थ दोषी आन कें हम मानि, ने निज कें तकै छी।
पूर्ण अछि, आनन्दमय जीवन बनल अछि एक शाश्वत।
स्वर्ग मे ने एहि जग मे प्राप्त हम सब कऽ सकै छी।

२४ अक्तूबर १९६७।

jन्मतिथि :
१९ अगस्त १९११ ई०
जन्मस्थान :
ग्राम—एरौत
जिला—दरभंगा



कविवर आरसी प्रसाद सिंह

प्रधानतः हिन्दीक कवि छथि। हिन्दी साहित्यक अन्तर्गत अपार साहित्यसृजन द्वारा ओ एक अमर स्थान बना लेने छथि; परन्तु, मूलतः ओ मैथिलीक कवि छथि। ...आइ जँ आरसी प्रसाद सर्वतो भावेन खाली मैथिली मे रचना करितथि, तँ कला ओ कल्पनाक दृष्टि सं हुनकर हिन्दी रचना सं उत्कृष्ट होइत। तथापि हुनकर जतबहि रचना मैथिली मे अछि, ओहि आधार पर कहि सकैत छी जे आरसी बाबू हिन्दी क कवि ओहिना जेना सरोजिनी नायडू अंग्रेजी क। आरसी बाबू मूलतः मैथिली कवि छथि। हँ, प्रधानतः हिन्दी क। हुनक अल्प मैथिली रचनाक मैथिली साहित्यक अन्तर्गत स्थायी महत्त्व छैक। हुनकर एक-एक गीत, समय-समय पर जकर रचना कें ओ मातृभाषाक प्रति अपन प्रेम प्रदर्शित कैलन्हि, ओहि दीपशिखा-सदृश अछि, जकर शीतल आलोक सँ मैथिली साहित्य-मंदिर चिरकाल लेल जगमगाइत रहत।

(प्राध्यापक) शैलेन्द्र मोहन झा

तारामण्डल

मुजफ्फरपुर

मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा

ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥

॥ बिज्ञापन ॥

मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक–

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय. एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो. तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्ल्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय. गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि. समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान नानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि । ओ दरभङ्गाक कलेक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा एम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासदगणमें नँ छथि ।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि ।

५ उक्त विषय सम्बन्धमें जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा ।